

Review Questions: मञ्जरा अध्याय 5-8: अमतामर गाथा-9

Name: _____ Date: NOV. 3, 2017

- (1) — स्त्रीणां आदिंगनं सुखं वंद्यथैव परं च।
- (2) — ज्ञानमां भजनं जनेना मुनिना आत्मिगुणानां धामं ध्यायुं न सुखं
छी ते मात्रं वसनेन्द्रियं द्वाराच्च न क्वली शक्यं
- (3) — सम्यग् दर्शित-ज्ञान-धारितनी शोकेना म्रियथा भजन्ता धरती (आपत्ती) नर्त्तं,
- (4) — साधुनां तप तपो गुणत न लीय तन्ने अहोरात्र न लीय
- (5) — अमतामर वृत्तान्तनी छद्दी गाथा सरस्वती देवीनी आराधना माटे छी।
- (6) — शोके वसना धारित पयसिवाजा साधु अनुसरोयाति देवीनी
तन्नेन्द्रियानां भजनसिध्दियन्तनी प्रसन्नतामे वदुं नय
- (7) — धरत वस्तुनां राग रानी अनिष्ट वस्तु परना द्वेष ने अस्कावयो
ते शमं कथ्याय छे।
- (8) — संकोशियानी इष्टि इथा वरसावनारी रनी
- (9) — आध्यात्मिग सुखं पुण्यं तमेना उदयश्च मया छे।
- (10) — तन्नेन्द्रियानी दिशसि वृद्धि मुनिने ज्ञानपयसिनी वृद्धि दीयाश्च दीय छे।
- (11) — तन्नेन्द्रियं शोके शरीरमां सुखनी प्राप्ति दीय।
- (12) — साधु सामे आत्मीनी कष्टो सत्यं तरे तने उदीरणा तरेयाय छे।
- (13) — साधु नयनं मात्रं पुण्यानुबंधं पुण्यं पामया माटे न छे।
- (14) — शोके दिवसना धारितना पयसिवाजा साधुने वंदे पक्षु वंदनं तरे छे।
- (15) — परमा गुणस्थानी आत्मा "वीतरागी" तरेयाय छे।
- (16) — स्त्रीणां आदिंगनं सुखं जिगुपादितं छे।
- (17) — संप्रति मलाराज पूर्वमयमां साधु रना।
- (18) — आध्यात्मिग सुखं स्वतंत्रं च तमे न तरे शक्यं
- (19) — ज्ञानपीयूषं शोके जंघु कषायानी आगनं भुक्त्वा शकं छे।
- (20) — अमतामरनी छद्दी गाथामां मानुंगसुरीनां तरेछे के पुं
ज्ञानं छुं शोके न आत्मीनि मित्तं तरे वंद्यथैव दीय छे।